Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/236
Peer Reviewed & Refereed Journal, JULY-AUG 2024, Vol- 13/84

प्राथमिक स्तर पर शिक्षण कार्य में गुणात्मक के सुधार हेतु अभिभावक–अध्यापक संघ के योगदान का अध्ययन

Dr. Suresh Chandra
Asst. Prof., Pushp Institute of Sciences & Higher Studies, Pilibhit (U.P.)
E-mail: s.chandrapbt@gmail.com
Dr. Ashok Kumar
Asst. Prof., Pushp Institute of Sciences & Higher Studies, Pilibhit (U.P.)
E-mail: ashokllbau@gmail.com
Sanjay Singh
Asst. Prof., Pushp Institute of Sciences & Higher Studies, Pilibhit (U.P.)
E-mail: ss8247094@gmail.com

Paper Received On: 20 July 2024
Peer Reviewed On: 24 August 2024
Published On: 01 September 2024

Abstract

प्रस्तुत शोध अध्ययन का प्राथमिक स्तर पर शिक्षण में गुणात्मक सुधार हेतु अभिभावक–अध्यापक संघ के प्रति अभिभावकों एवं अध्यापकों के दृश्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना था। प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। न्यादर्श के रूप में शोधकर्ताओं ने प्रयागराज जनपद के मनौरी केन्द्रीय विद्यालय व विकास क्षेत्र चका के प्राथमिक विद्यालय से 100 (50 अध्यापक व 50 अभिभावक) को सम्मलित किया गया। संमकों का एकत्र करने के लिए भोधकर्ताओं ने एक स्वनिर्मित प्रयोग किया गया। संकलित संमकों के सांख्यिकीय विश्लेशण हेतु टी–परीक्षण सांख्यिकी को प्रयोग में लाया गया। शोध अध्ययन से प्राप्त निश्कर्शों के आधार पर कहा जा सकता है प्राथमिक स्तर पर शिक्षण में गुणात्क सुधार हेतु अभिभावक–अध्यापक संघ के प्रति केन्द्रीय व प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों व अभिभावको के दृश्टिकोण में अन्तर नहीं पाया गया।

मुख्य शब्दावली *: प्राथमिक स्तर, केन्द्रीय विद्यालय व अभिभावक–अध्यापक संघ।*

प्रस्तावना

जिस प्रकार अंधेरे कमरे में ज्योति प्रज्ज्वलित होने से पूरा कमरा प्रकाशमान हो जाता है ठीक उसी प्रकार से मनुश्य के जीवन में शिक्षा की अमर ज्योति के जलने से वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रगति की ओर अग्रसर होकर पूर्णतः एवं आत्म संतुश्टि की प्राप्ति करता है। छात्रों के शिक्षा की नीव प्राथमिक शिक्षा है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

भारत सरकार ने जहाँ एक ओर 14 वर्श की आयु तक की शिक्षा निःशुल्क एवं अनिवार्य देने का प्रबन्ध किया है वहीं पर राज्य सरकार ने शिक्षक–छात्र अनुपात को सहीं करने का प्रयास किया है। अनेक समितियों एवं योजनाओं का गठन किया गया। ग्रामीण एवं भाहरी क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा निम्न कारणों से दुर्दशागृस्त है।

1. संस्धानों का अभाव।
2. शिक्षकों का अपने शिक्षण कार्य के प्रति रूचि न लेना।
3. ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावकों का शिक्षा के प्रति जागरूक न होना।
4. शहरी अभिभावकों में व्यस्त्ता का होना एवं शिक्षण सम्बन्धी कार्यों का सम्पूर्ण दायित्व विद्यालयों को देना।
5. सह–शिक्षा के महत्व को न समझना।

उपयुक्त समस्याओं को हल करने के लिए अभिभावक–अध्यापक संघ का गठन किया जाता है। बस्तुतः यह संघ विद्यालय में अध्ययनरत् छात्रों की विभिन्न समस्याओं को समझने एवं उनके समाधान हेतु प्रभावी उपाय करने के लिए अभिभावकों को अध्यापकों के सम्पर्क में लाने एंव तदानुसार शिक्षा को प्रभावी रूप देने की दिशा में एक प्रयोग है।

पृश्ठभूमि

प्राथमिक शिक्षा मानव की मूलभूत आव यकता के अतिरिक्त मानव के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए, रोज़गार उपलब्ध का सृजन करने एवं क्षेत्रीय पिछड़ेपन को दूर करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है जो किसी राश्ट्र के विकास के लिए अत्यन्त आव यक है। भार्मा (2004) ने हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जनपद में छात्रों की भौक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभाव ीलता का अध्ययन किया और यह स्वीकार किया कि जनपद स्तर पर शैक्षिक प्रशासन की मुख्य धारा में संस्थागत विकास, समुदाय आधारित निगरानी प्रणाली व प्रभावी लागत एवं सक्षम प्रणाली के द्वारा और सुधार करके सर्व शिक्षा अभियान को और अधिक सफल बनाया जा सकता है। चन्द्र व सिंह (2021) ने सर्व शिक्षा अभियान की प्रभाव ीलता के प्रति अध्यापकों के दृश्टिकोण का अध्ययन पर शोधकाय किया और पाया कि सर्व शिक्षा अभियान की प्रभाव ीलता को अध्यापकों के दृश्टिकोण में सफल माना जा सकता है। चन्द्र व सिंह (2022) ने सर्व शिक्षा अभियान की प्रभाव ीलता के अभिभावाकों का दृश्टिकोण पर अध्ययन किया और पाया कि लिंग व क्षेत्र के आधार पर कोई अन्तर नहीं पाया गया। उपरोक्त अध्ययन के पश्चात शोधकर्ताओं ने यह निश्चय किया कि प्राथमिक स्तर पर शिक्षण में सुधार हेतु अभिभावक–अध्यापक संघ के योगदान के प्रति अभिभावकों व अध्यापकों के दृश्टिकोण का अध्ययन किया जाये।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

समस्या कथन

प्राथमिक स्तर पर शिक्षण में गुणात्मक सुधार हेतु अभिभावक–अध्यापक संघ के योगदान का अध्ययन

संक्रियात्मक परिभाशाएं

प्राथमिक स्तर

प्राथमिक स्तर से आशय शिक्षा के उस स्तर से है जिसमें छात्रों को कक्षा 1–8 तक का शिक्षण कार्य किया जाता है।

अभिभावक–अध्यापक संघ

अभिभावक–अध्यापक संघ से आशय उस संघ से है जिसमें अभिभावक व अध्यापक मिलकर विद्यालय में शिक्षण की व्यवस्था को उन्नतिशील बनाने का प्रयास करते हैं।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. प्राथमिक स्तर पर शिक्षण में गुणात्मक सुधार हेतु अभिभावक–अध्यापक संघ के प्रति अध्यापकों के दृश्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. प्राथमिक स्तर पर शिक्षण में गुणात्मक सुधार हेतु अभिभावक–अध्यापक संध के प्रभि अभिभावकों के दृश्टिकोण को तुलनात्मक अध्ययन करना ।

परिकल्पनाएं

H_1 : प्राथमिक स्तर पर शिक्षण में गुणात्मक सुधार हेतु अभिभावक–अध्यापक संघ के योगदान के प्रति केन्द्रीय व परिशदीय अध्यापकों के दृश्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

H_2 : प्राथमिक स्तर पर शिक्षण में गुणात्मक सुधार हेतु अभिभावक–अध्यापक संघ के योगदान के प्रति केन्द्रीय एव परिशदीय विद्यालयों के अभिभावकों के दृश्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध रूपरेखा

प्रस्तुत भाोध अध्ययन में शोधकर्ताओं के द्वारा शोध की वर्णनात्मक रूपरेखा को अपनाया गया है। शोध विधि के रूप में शोध की सर्वेक्षण विधि को प्रयोग में लाया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयागराज जनपद के समस्त प्राथमिक व केन्द्रीय विद्यालय के अध्यापनरत् अध्यापकों एवं उनमें अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिभावकों को जनसंख्या लिया गया।

न्यादर्श व न्यादर्शन विधि

प्रस्तुत भाोध अध्ययन में शोधकर्ताओं के द्वारा प्रयागराज जनपद के मनौरी केन्द्रीय विद्यालय में अध्यापनरत् अध्यापकों एवं व उनमें अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिभावकों व चाका विकास खण्ड में

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

संचालित प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत् अध्यापकों व उनमें उनमें अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिभावकों का चयन न्यादर्शन की सरल दैव न्यादर्शन विधि के आधार पर किया गया।

न्यादर्श का विवरण

क्र. सं.	न्यादर्श	अध्यापक	अभिभावक
1	केन्द्रीय विद्यालय	25	25
2	प्राथमिक विद्यालय	25	25

उपकरण

शोध हेतु संमकों की आवश्यकता होती है तथा संमकों के संकलन हेतु उपकरण की आवश्यकता होती है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध कार्य में भाोधकर्ताओं के द्वारा एक स्वनिर्मित उपकरण को उपयोग लाया गया।

फलांकन कुंजी

क्र. स.	प्रतिक्रिया	अधिभार
1	अधिक प्रभावी	3
2	प्रभावी	2
3	नगण्य	1

प्रयुक्त सांख्यिकी

संकलित संमकों के सांख्यिकीय विश्लेशण हेतु सांख्यिकीय विधियों की आव यकता होती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ताओं के द्वारा टी–परीक्षण को प्रयोग लाया गया।

सांख्यिकीय विश्लेशण

H_1 : प्राथमिक स्तर पर शिक्षण में गुणात्मक सुधार हेतु अभिभावक–अध्यापक संघ के योगदान के प्रति केन्द्रीय व परिशदीय अध्यापकों के दृश्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका सं.–1

अभिभावक–अध्यापक संघ के योगदान के प्रति केन्द्रीय एव परिशदीय विद्यालयों के अध्यापकों के दृश्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

न्यादर्श	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
केन्द्रीय विद्यालय अध्यापक	25	72	3.4641	–6.84	सार्थक नहीं
परिशदीय विद्यालय अध्यापक	25	79.52	4.2634		

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सार्थकता स्तर–0.05

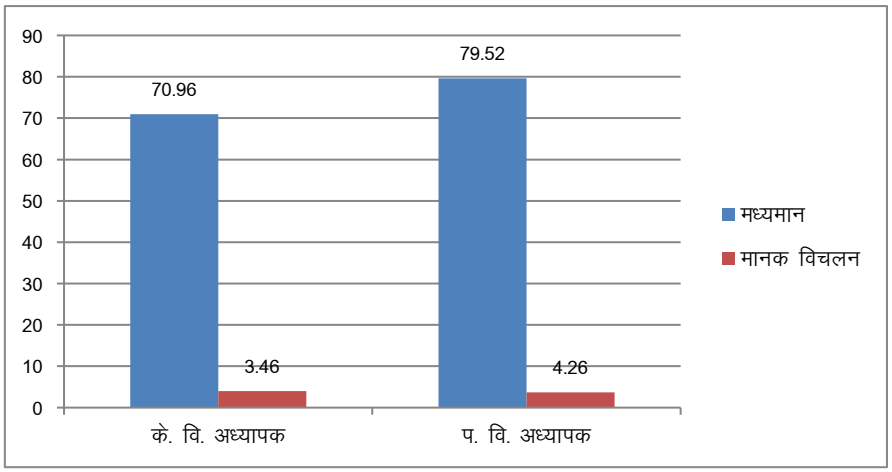

रेखाचित्र–1

तालिका सं. 1 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्राथमिक स्तर के शिक्षण में सुधार हेतु अभिभावक–अध्यापक संघ के योगदान के प्रति केन्द्रीय व परिशदीय अध्यापकों के दृश्टिकोण मध्य परिगणित t का मूल्य –.6.84 है जो स्वतंत्रता अंश 48 पर तालिका मूल्य 2.0 से बहुत कम है अतः इसे सार्थक नहीं कहा जा सकता है। इसलिए शून्य परिकल्पना प्राथमिक स्तर पर शिक्षण में सुधार हेतु अभिभावक–अध्यापक संघ के केन्द्रीय व परिशदीय विद्यालय के अध्यापकों के दृश्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है को स्वीकार किया जाता है। अतः कहा जा सकता है कि केन्द्रीय व परिशदीय विद्यालय के अध्यापकों के दृश्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। रेखाचित्र 1 के अवलोकन से केन्द्रीय व परिशदीय विद्यालयों के अध्यापकों के दृश्टिकोण में जो अन्तर प्रदर्शित हो रहा है वह सार्थक नहीं है। दोनो समूहों के मध्य अन्तर का कारण उनकी सेवा भार्तें व उनके कार्य स्थल के भिन्नता के कारण हो सकता है।

H_2 : प्राथमिक स्तर पर शिक्षण में गुणात्मक सुधार हेतु अभिभावक–अध्यापक संघ के योगदान के प्रति केन्द्रीय एव परिशदीय विद्यालयों के अभिभावकों के दृश्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका सं. : 2

अभिभावक–अध्यापक संघ के योगदान के प्रति केन्द्रीय एव परिशदीय विद्यालयों के अभिभावकों के दृश्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

न्यादर्श	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
केन्द्रीय विद्यालय अभिभावक	25	70.96	3.9632	–8.02	सार्थक नहीं
परिशदीय विद्यालय अभिभावक	25	79.64	3.6842		

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सार्थकता स्तर–0.05

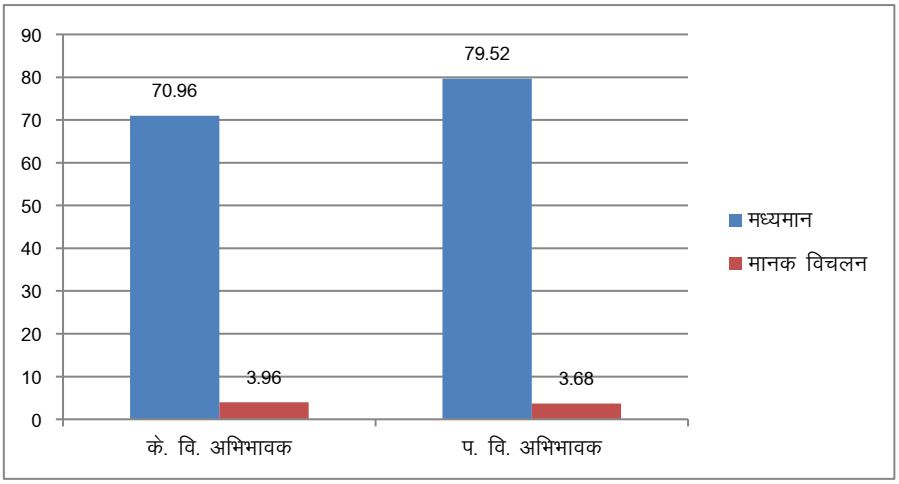

रेखाचित्र–2

तालिका सं. 2 के अवलोकन से प्रतीत होता है कि प्राथमिक स्तर के शिक्षण में सुधार हेतु अभिभावक–अध्यापक संघ के योगदान के प्रति केन्द्रीय व परिशदीय अभिभावकों के दृश्टिकोण के मध्य परिगणित t का मूल्य –8.02 है जो स्वतंत्रता अंश 48 पर तालिका मूल्य 2.0 से बहुत कम है अतः इसे सार्थक नहीं कहा जा सकता है। इसलिए शून्य परिकल्पना प्राथमिक स्तर पर शिक्षण में सुधार हेतु अभिभावक–अध्यापक संघ के केन्द्रीय व परिशदीय विद्यालय के अभिभावकों के दृश्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है को स्वीकार किया जाता है। अतः कहा जा सकता है कि केन्द्रीय व परिशदीय विद्यालय के अभिभावकों के दृश्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। रेखाचित्र 1 के अवलोकन से केन्द्रीय व परिशदीय विद्यालयों के अभिभावकों के दृश्टिकोण में जो अन्तर प्रदर्शित हो रहा है वह सार्थक नहीं है। दोनो समूहों के मध्य अन्तर का कारण उनकी शिक्षा का स्तर व जागरूकता में भिन्नता के कारण हो सकता है।

निश्कर्श

1. प्राथमिक स्तर के शिक्षण में गुणात्मक सुधार हेतु अभिभावक–अध्यापक संघ के प्रति केन्द्रीय व परिशदीय विद्यालयों के अध्यापकों के दृश्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. प्राथमिक स्तर के शिक्षण में गुणात्मक सुधार हेतु अभिभावक–अध्यापक संघ के प्रति केन्द्रीय व परिशदीय विद्यालयों के अभिभावकों के दृश्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

भविश्य हेतु सुझाव

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निश्कर्श के आधार पर भविश्य में होने वाले शोध अध्ययन पर सुझाव दिये जा सकते हैं जो निम्न प्रकार है–

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक स्तर पर अभिभावक–अध्यापक संघ के योगदान के प्रति अध्यापकों व अभिभावकों के दृश्टिकोण का अध्ययन किया गया इसी भाोध कार्य का माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण की गुणवत्ता के सुधार किया जा सकता है।
2. उच्च शिक्षा के स्तर में सुधार हेतु अभिभावक–अध्यापक संघ का योगदान लिया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

शर्मा, एस. (2004).ए स्ट्डी ऑफ इफेक्टिवनेश ऑफ एसएसए इन डिस्ट्रिक्ट हमीरपुर इन टर्म ऑफ एकैडमिक अचीवमेन्ट्स ऑफ स्टूडेन्ट्स. एम. एड. डिजर्टेशन. हिमाचल प्रदेश

गुप्ता, एस. पी. (2017)अनुसंधान संदर्शिकाः सम्प्रत्य, कार्यविधि एवं प्रविधि. इलाहबाद, शारदा पुस्तक भवन.

चन्द्र, एस. व सिंह, वाई. पी. (2021). सर्व शिक्षा अभियान की प्रभाव ीलता के प्रति अध्यापकों के दृश्टिकोण का अध्ययन. स्कॉलरली रिर्सच जर्नल फॉर इण्टरडिसीप्लनरी स्ट्डीज. 9(68). 16288–16298.

चन्द्र, एस. व सिंह, वाई. पी. (2022). सर्व शिक्षा अभियान की प्रभाव ीलता के प्रति अभिभावकों का दृश्टिकोण. स्कॉलरली रिर्सच जर्नल फॉर ह्यूमैनिटी साइन्स एण्ड इंग्लिस लैंग्यूज. 10(49). 12114–12122.

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies